ग़लत बोल कर किसी को दुख न पहुँचाओ

मुहम्मद अज़हर मदनी

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक शख्स ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! अमुक औरत ज़्यादा से ज़्यादा नमाज़ पढ़ने, रोज़ा रखने और सदक़ा करने में मश्हूर है लेकिन वह अपनी जुबान से अपने पड़ोसियों को सताती है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वह जहन्नमी है फिर इस शख्स ने कहा कि अमुक औरत नमाज़ पढ़ने, रोज़ा रखने और सदक़ा में कमी करने में मश्हूर है वह पनीर के चन्द टुकड़े सदक़ा कर देती है लेकिन अपनी जुबान से अपने पड़ोसियों को नहीं सताती, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः वह औरत स्वर्ग में जायेगी। (मुस्नद अहमद, यह हदीस हसन है)

कहा जाता है कि इन्सान को इज्जत देने में जुबान का भी बड़ा अहम रोल होता है, यही जुबान ही किसी इन्सान के अच्छे और बुरे होने का लक्षण पहले से ही बता देती है, इसी लिये कहा जाता है इन्सान का सम्मान उसके अपने ऊपर निर्भर करता है, चन्द सेकेण्डों में बदजुबानी और गलत भाषा का उपयोग करने की वजह से इज्जत खाक में मिल जाती है। इसी लिये यह भी कहा जाता है कि पहले तौलो फिर बोलो।

इस्लाम धर्म में जिस तरह नमाज़, रोज़ा, हज ज़कात की अहमियत है उसी तरह इन्सान के अपने चरित्र की भी अहमियत है, जुबान व बयान का इन्सान के चरित्र से बहुत गहरा संबन्ध है क्योंकि भाषा से ही किसी का चरित्र स्पष्ट होता है, और इससे नाम भी होता है और बदनामी भी होता है इस लिये हमारे लिये ज़रूरी है कि किसी भी जगह चाहे घर हो, आफिस हो, गांव मोहल्ला हो, जुबान के गलत स्तेमाल से परहेज़ करें और ऐसी भाषा का प्रयोग करें जिससे किसी को तकलीफ होने के बजाये उसको खुशी हो, बोलने वाले से सामने वाला शख्स प्रभावित हो और समाज गांव, मोहल्ले में एक अच्छा सन्देश जाये, हदीस में जुबान को कन्ट्रोल में रखने वाले की प्रशंसा की गयी है जब कि जुबान से दूसरों को दुख पहुंचाने वाले की निन्दा और चेतावनी दी गई है इसलिये हमेशा अपनी जुबान से ऐसे वाक्य का प्रयोग करें जिससे किसी को तक्लीफ न हो क्योंकि गलत शब्दों के कारण समाज में झगड़े क़त्ले होते हैं, रिश्ते नाते बिखर जाते हैं, संबन्धों में खटास पैदा हो जाती है। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फ़रमाया हैः ''और मेरे बन्दों से कह दीजिये कि वह बहुत ही अच्छी बात मुंह से निकाला करें क्योंकि शैतान आपस में फ़साद डलवाता है, बेशक शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है।'' (सूरह इसराः ५३)

मासिक

इसलाहे समाज

सितंबर 2024 वर्ष 35 अंक 9

रबीउल अव्वल 1446

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

- वार्षिक राशि 100 रुपये
- प्रति कापी 10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	ग़लत बोल कर किसी को दुख ...	2
2.	सफल इन्सान	4
3.	आस्था का अर्थ	5
4.	पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद स० की खूबियाँ	08
5.	अनाथ के माल व जायदाद की हिफाज़त	10
6.	इस्लाम धर्म में दया करने का सवाब	12
7.	क़यामत की निशानियाँ	15
8.	इस्लाम धर्म में समता और आज़ादी ...	18
9.	प्रेस रिलीज़ (चांद)	21
10.	अम्र बिन आस रज़ि० की फ़ज़ीलत	22
11.	प्रेस रिलीज़	23
12.	प्रेस रिलीज़	24
13.	व्यवपारी के साथ आप का व्यवहार	25
14.	सब्र का फल	26
15.	अपील	27
16.	अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन)	28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com
अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है
वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

सम्पादकीय

सफल इन्सान

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

दुनिया की कोई कौम एहसास के मरने के बाद बाकी नहीं रहती और न उसे कोई जीवित रख सकता है। इस वक़्त मानवता और विशेष रूप से मुसलमानों के एहसास को झिंझोड़ने की सख़्त ज़रूरत है। अगर यह एहसास और चेतना जाग गई तो फिर दुनिया की सभी कठिनाइयों का समाधान हो जायेगा, सारी नफरतें खत्म हो जायेंगी, सारे अत्याचार मिट जायेंगे और धरती पूर्ण रूप से अम्न व शान्ति और हर्षोउल्लास का स्थल बन जायेगी।

इन्सान अगर गलत काम करने से माँ बाप के सामने डर जाये, रिश्तेनातेदारों के साथ इस गलत काम को करने से पसीना छूटने लगे, सिपाही पुलिस और शासक के सामने गलत काम करने का साहस न करता हो तो उसकी बुराई से उस का नफ्स भी बचता है वह स्वयं सफल नज़र आता है और कभी कभी तो केवल इसके करने की कल्पना से दहल जाता है कि अगर वह यह गलती कर बैठता तो कितना अपमानित होता और कितना मज़ाक़ का सजावार ठेहरता? कितने आर व शनार का शिकार होता। वह जमीन में गिर जाना पसन्द करता है मगर ऐसे काम करने से डरता है जिससे बदनामी हाथ आती है और जिस की वजह से लोगों को मुंह दिखाने के लायक़ नहीं रहता है। अब उसका वजूद ही अपने ऊपर बोझ लगने लगता है। भला बताओ अगर इन्सान अल्लाह के सामने खड़ा होने की कल्पना करे और यकीन करे कि वह हमारा हर मामला और छोटे बड़े तमाम कर्मों को देख रहा है उसके सामने जवाब देही करनी है तो फिर वह बुराई करेगा?

अगर अल्लाह से यही भय अल्लाह के सामने जवाबदेही का एहसास इन्सान के अन्दर जाग जाये तो इन्सान दुनिया में भी कामयाब हो जाये और आखिरत में भी अल्लाह के सामने सब से कठिन और दिल दहलाने वाली जवाबदेही से बच जाये। एक मजदूर, एक आफिसर, एक मंत्री और एक सलाहकार अगर अपने स्वामी और जिम्मेदार के सामने जवाबदेही से डरता है और उसके पास जाने से कतराता है मगर वह उस का हर तरह से आदेश का पालन करता है क्योंकि स्वामी के सामने जवाब देना पड़ेगा। अगर कोर्ट के कटहरे से बाहर कर दिया जाऊं और भरी अदालत में आरोपी बना दिया जाऊं तो इस से बेहतर है कि अच्छा काम करूँ, डियूटी को डियूटी समझ कर करूँ, फारमेल्टी पूरी न करू, वक़्त पास न करूं बल्कि दिल व जान और पूरी क्षमता को काम में लाते हुए बेहतर से बेहतर कारनामा अंजाम दूं कि कंपनी के सामने, प्रबन्धक के सामने और मालिक के सामने सुबकी न उठानी पड़े और शर्मिन्दगी न झेलनी पड़े।

मुसलमान अगर अल्लाह

तआला के सामने खड़े होने से डरता है तो नमाज़ भी कभी नहीं छोड़ सकता। ज़कात देने में कोताही नहीं करेगा, रोजा रखने को सौभाग्य समझे गा, हज वाजिब हो जाने पर उसकी अदायगी के जतन करेगा, सभा में हो या तन्हाई में पाप करने से परहेज़ करेगा। रिश्ता काटने से बचेगा, मां बाप के अधिकार को अदा करने में सब कुछ कुर्बान कर देगा मगर इससे मुंह नहीं मोड़ेगा।

पड़ोसियों का अधिकार अदा करेगा। मजदूर मालिक के माल, वक़्त और अपने अमल में ख़ियानत नहीं करेगा, न मालिक अपने मजदूरों, वर्करों, कार्यकर्ताओं, नोकरों की मजदूरी में कमी करेगा और वह उन पर सख्ती करने से बाज रहेगा। उनके खून पसीना बहाने पर उसके हक़ में बेहतर सोचे गा उससे अच्छा बर्ताव और मामला करेगा, वह अच्छा मामला करने पर मिसाल बन जायेगा और सबसे बड़ी चीज़ अपने शाश्वत जीवन की सारी हिलाकतों, बुराइयों, दुखों और प्रकोपों से बच जायेगा और उसका रब उससे खुश हो जायेगा जिस तरह वह आख़िरत के दुख व गम से मुक्ति पायेगा और बहुत सारी जवाब देहीऔर सवालात से सुरक्षित होगा उसी तरह दुनिया की चन्द दिनों की जिन्दगी में भी अल्लाह के भय से सरशार हो कर और इच्छा को काबू में रखने और उसको बुराइयों से रोकने की वजह से दुनिया में अम्न व चैन, इतमीनान व सुकून और सुगाम जीवन से पुरस्कृत किया जायेगा और दुनिया के दुखों से उसे छुटकारा हासिल होगा। आज अगर ऐसा हो जाये तो दुनिया से भ्रष्टाचार खतम हो जाये, लूट मार, बलात्कार, धोकाधड़ी और मिलावट कष्टदायी न बनें और देश व समुदाय और मानवता के सभी मामलात बेहतरीन हो जायें। इस वक़्त मुसलमानों और इन्सानों को अपने एहसास व अन्तरात्मा को झिंझोड़ने की ज़रूरत है ताकि स्रेष्टा और सृष्टि का अधिकार पामाल न हो और इन्सान मानवता से गिर कर सबसे निचले स्तर तक न पहुंच जाये बल्कि वह स्रेष्टा और सृष्टि के सामने सफल हो खास तौर से उस दिन ‘‘जिस दिन कोई भी माल और औलाद फायदा नहीं देगी।’’ (सूरे शोअ़रा–८८)

❑❑❑

इस्लाहे समाज
खरीदारी फार्म

पत्रिका को घर पर मंगवाने के लिये अपने पते में निम्न विवरण ज़रूर लिखें।

नाम........................

पिता का नाम...............

स्थान........................

पोस्ट आफिस...............

वाया........................

तहसील......................

जिला........................

पिन कोड..................

राज्य का नाम..............

मोबाइन नम्बर..............

अपना मनी आर्डर इस पते पर भेजें।

आफिस का पताः **अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली–6**

बैंक और एकाउन्ट का नामः

Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

A/c No. 629201058685 (ICICI Bank) Chani Chowk, Delhi-6

RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292

नोटः-बैंक द्वारा रक़म भेजने से पहले आफिस को सूचित करें।

आस्था का अर्थ

अब्दुल करीम बिन अब्दुल मजीद अद्दीवान

मुस्लिम पर वाजिब है कि वह अल्लाह पर उसके फ़रश्तिों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, अंतिम दिन पर और अच्छी बुरी तक़दीर पर विश्वास रखे।

१. अल्लाह तआला पर विश्वास रखनाः

हम अल्लाह तआला की रूबूबियत पर विश्वास रखते हैं कि वह रब है, पैदा करने वाला है, मालिक है और सारे कार्य का संचालक है। मूलतः पैदा करने में वह अकेला है। अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

''क्या अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य भी स्रष्टा है जो तुम्हें आकाश तथा धरती से जीविका पहुंचाये?'' (सूरह फ़ातिरः ३)

हम यह विश्वास करें कि वही संसार का मालिक और उसका स्रष्टा है, जैसा कि वह फ़रमाता हैः

''और आकाशों और धरती का मालिक अल्लाह तआला ही है'' (सूरह आले इमरानः १८६)

संसार का संचालन करने में वह अकेला है, अर्थात मनुष्य यह विश्वास रखे कि अल्लाह वहदहु के अतिरिक्त कोई संचालक नहीं है। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

''(हे नबी!) आप पूछें कि वह कौन है जो तुमको आकाश तथा ध ारती से जीविका पहुंचाता है, वह कौन है जो कानों तथा आँखों पर पूर्ण अधिकार रखता है, तथा वह कौन है जो सजीव को निर्जीव से निकालता है, तथा निर्जीव को सजीव से निकालता है, तथा वह कौन है जो सभी कार्यों का संचालन करता है? अवश्य वह यही कहेंगे कि अल्लाह। तो उनसे कहिए कि फिर डरते क्यों नहीं? तो यह है अल्लाह तआला जो तुम्हारा सत्य प्रभू है, फिर सत्य के पश्चात अन्य क्या रह गया सिवाय भटकावे के, फिर कहाँ फिरे जाते हो?'' (सूरह यूनुसः ३१,३२)

अल्लाह तआला की उलूहियत पर हम विश्वास रखते हैं, यानी वही सत्य पूज्य है, और बेशक पूजा का हक़दार वही अकेला अल्लाह तआला है। अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

''यह सब (प्रबन्ध) इस कारण है कि अल्लाह तआला सत्य है तथा उसके अतिरिक्त जिनको लोग पुकारते हैं सब असत्य हैं।'' (सूरह लुक़्मानः ३०)

पूजा (इबादत) के क़िस्मों में से कोई भी क़िस्म अगर किसी ने अल्लाह के अतिरिक्त किसी दूसरे के लिए किया, जैसे दुआ (प्रार्थना), इस्तिग़ासा (कठिनाई के समय सहायता माँगना), नज्र व ज़बह इत्यादि, तो वह शिर्क के जाल में फंस गया, यानी उसने इबादत में अल्लाह तआला के साथ दूसरों को साझी कर लिया। चाहे यह पूजा जिस व्यक्ति के लिए की जाए वह क़रीबी फ़रिश्ता हो, या भेजा हुआ रसूल हो, या अल्लाह के वलियों में से कोई वली हो या कोई भी मख़लूक़ हो।

जो व्यक्ति इस शिर्क के जाल में फंस गया, उसे बेशक अल्लाह तआला क्षमा नहीं करेगा और उसका ठिकाना

हमेशा की आग है। (अगर वह अपने इस कार्य से तौबह नहीं करता है और मरने से पहले इसे नहीं छोड़ देता है) अल्लाह तआला फ़रमाता है:

''अल्लाह अपने साथ शिर्क किये जाने को कभी क्षमा नहीं करेगा और इसके सिवाय (पापों) को जिसके लिए चाहे क्षमा कर देगा'' (सूरह निसाः ११६)

और हम अल्लाह तआला के उन नामों और सिफ़तों (गुणों) पर विश्वास रखते हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने लिए साबित किया है या उसके लिए उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने साबित किया है। परन्तु हम अल्लाह के गुणों को सृष्टि के किसी गुण से तशबीह नहीं देते हैं, और न हम यह कहते हैं कि उसकी सिफ़तें इस तरह की हैं। बल्कि हम वही कहते हैं जैसे उसने अपने बारे में फ़रमाया है:

''उस जैसा कोई वस्तु नहीं, वह सुनने वाला देखने वाला है।'' (सूरह शूराः११)

कुरआन व हदीस में अल्लाह की जिन सिफ़ात का उल्लेख मिलता है, चाहे तफ़्सीली तौर पर, या इजमाली तौर पर (विस्तृत या संक्षिप्त रूप से) अथवा किसी गुण को साबित करता हो या किसी ऐब का इनकार करता हो, हम कुरआन व हदीस की उन दलीलों को ज़ाहिरी मअ्ना पर जारी करते हुए अल्लाह तआला की सिफ़तों को उस हक़ीक़त पर महमूल करेंगे जिस तरह उसके लिए लायक़ व ज़ेबा है, अर्थात बग़ैर तकईफ़, बग़ैर तम्सील, बग़ैर तहरीफ़ और बग़ैर तअ्तील के। इस बारे में उम्मत के पूर्वजों (सलफ़) और सही दिशा पर चलने वाले इमामों का यही मनहज और तरीक़ा रहा है।

और हम उन सब बातों की नफ़ी (इनकार) करते हैं जिन की अल्लाह तआला ने अपनी किताब में नफ़ी की है, या उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिन सिफ़ात (गुण) या अफ़आल (कर्मों) इत्यादि की नफ़ी की है। और हम उन तमाम बातों से ख़ामोशी इख़्तियार करते हैं जिन से अल्लाह और उसके रसूल ख़ामोश हैं। हम यह भी विश्वास करते हैं कि अल्लाह तआला आसमान में अपने अर्श पर है, और वह (अपने इल्म व ज्ञान से) अपनी मख़लूक़ के साथ है, उनकी हालत को जानता है, उनकी बातों को सुनता है, उनके कार्यों को देखता है, उनकी आवश्यकताओं का संचालन करता है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

और हम अल्लाह तआला के उन नामों और सिफ़तों (गुणों) पर विश्वास रखते हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने लिए साबित किया है या उसके लिए उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने साबित किया है। परन्तु हम अल्लाह के गुणों को सृष्टि के किसी गुण से तशबीह नहीं देते हैं, और न हम यह कहते हैं कि उसकी सिफ़तें इस तरह की हैं। बल्कि हम वही कहते हैं जैसे उसने अपने बारे में फ़रमाया है:
''उस जैसा कोई वस्तु नहीं, वह सुनने वाला देखने वाला है।'' (सूरह शूराः११)

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खूबियों का एतराफ

डा० अब्दुर्रहमान अब्दुल जब्बार परेवाई

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि उनसे अबू सुफयान बिन हर्ब ने यह वाक्या बयान किया है कि हिरक्ल (रूम का सम्राट) ने उन के पास कुरैश के काफिले में एक आदमी बुलाने को भेजा और उस वक्त यह लोग तिजारत के लिये शाम (सीरिया) गये हुये थे और यह वह जमाना था जब रसूल स०अ०व० ने कुरैश और सुफयान से एक वक्ती समझौता किया हुआ था। जब अबू सुफयान और दूसरे लोग हिरक्ल के पास ईलिया पहुंचे जहां हिरक्ल ने दरबार बुलाया था। उसके आस पास रूम के बड़े बड़े लोग ओलमा एवं मंत्री बैठे हुये थे। हिरक्ल ने उनको और अपने प्रवक्ता को बुलवाया। फिर उनसे पूछा कि तुम में से कौन शख्स रिसालत के दावेदार का करीबी रिश्तेदार है? अबू सुफयान कहते हैं कि मैं बोल उठा कि मैं उनका सबसे करीबी रिश्तेदार हूं। यह सुनकर हिरक्ल ने हुक्म दिया कि इसे (अबू सुफयान) को मेरे पास लाकर बुला कर बिठाओ और उसके साथियों को उसकी पीठ के पीछे बिठा दो। फिर अपने तर्जुमान से कहा कि इन लोगों से कह दो कि मैं अबू सुफयान से इस शख्स के (मुहम्मद स०अ०व०) के हालात पूछता हूं। अगर यह मुझसे किसी बात में झूठ बोल दे तो तुम उस झूठ को बता देना। अबू सुफयान बयान करते हैं कि अल्लाह की क़सम! अगर मुझे यह गैरत न आती कि यह लोग मुझको झुठलायेंगे तो मैं आपके बारे में ज़रूर गलत बयान करता।

हिरक्ल ने पहला सवाल किया कि उस शख्स का खानदान तुम लोगों में कैसा है। मैंने कहा कि वह बड़े खानदान के हैं। पूछा कि इससे पहले भी किसी ने तुम लोगों में ऐसी बात की थी। मैंने कहा नहीं।

पूछाः क्या उसके बड़ों में बादशाह हुआ है? मैंने कहा नहीं

फिर हिरक्ल ने पूछा कि क्या बड़े लोगों ने उसकी पैरवी की है या कमज़ोरों ने? मैंने कहाः कमज़ोरों ने फिर पूछा उसके मानने वाले बढ़ते जा रहे हैं या कोई साथी फिर भी जाता है? मैंने कहा नहीं।

पूछा कि क्या नबुव्वत का दावा करने से पहले कभी झूठ बोला है? मैंने कहाः नहीं और अब हमारी उससे सुलह हुदैबिया (एक समझौता) हुआ है। मालूम नहीं कि वह इसमें क्या करने वाला है। मैं इस बात के सिवा और कोई बात इसमें शामिल नहीं कर सकता। पूछा कि क्या तुम्हारी उससे कभी लड़ाई भी होती है? हमने कहा हां।

पूछा कि तुम्हारी और उसकी जंग का क्या हाल होता है? मैंने कहा लड़ाई डोल की तरह है कभी वह हमसे मैदाने जंग जीत लेते हैं और कभी हम उनसे जीत लेते हैं। पूछा कि वह तुम्हें किस बात का

हुक्म देता है?

मैंने कहा कि वह कहता है कि केवल एक अल्लाह की इबादत करो उसका किसी को साझीदार न बनाओ। अपने बाप दादा की शिर्क की बातें छोड़ो और हमें नमाज़ पढ़ने, सच बोलने परहेज़गारी और रिश्ता नाता जोड़ने का हुक्म देता है।

यह सब सुनकर फिर हिरक्ल ने अपने तर्जुमान से कहा कि अबू सुफयान से कह दो कि मैंने तुमसे उसका नसब पूछा तो तुमने कहा कि वह हममें ऊंचे खानदान का है और नबी अपनी कौम में ऊंचे खानदान से ही भेजे जाते हैं।

मैंने तुम से पूछा कि नबुव्वत के दावे की यह बात तुम्हारे अन्दर इससे पहले भी किसी ने की थी तो तुमने कहा कि नहीं। तब मैंने अपने दिल में कहा कि अगर यह बात पहले भी किसी ने कही होती तो मैं यह समझता कि इस शख्स ने भी वही काम किया है जो पहले कही जा चुकी है।

मैंने तुम से पूछा कि उसके बड़ों में कोई बादशाह गुज़रा है तुमने कहा नहीं। मैंने दिल में कहा कि उनके बुज़ुर्गों में कोई बादशाह हुआ होगा तो कह दूंगा कि वह शख्स इस बहाने अपने पूर्वजों की बादशाहत और उनका मुल्क दोबारा हासिल करना चाहता है।

और मैंने तुमसे कहा कि नबुव्वत का दावा करने से पहले तुमने कभी उसको झूठ बोलने का आरोप लगाया है? तुमने कहा नहीं।

इसके जवाब में मैंने समझ लिया कि जो शख्स आदमियों के साथ झूठ बोलने से बचे वह अल्लाह के बारे में कैसे झूठ बोल सकता है।

और मैंने तुम से पूछा कि बड़े लोग पैरवी करते हैं या कमजोर लोग। तुमने कहा कि कमज़ोरों उसकी बात मानी है तो हकीकत में यही लोग रसूलों के पैरोकार होते हैं।

और मैंने तुमसे पूछा कि उसके साथी बढ़ रहे हैं या कम हो रहे हैं?

तुमने कहा वह बढ़ रहे हैं और ईमान की कैफियत यही होती है यहां तक वह पूरा हो जाता है और मैंने तुमसे पूछा कि क्या कोई उसके दीन से नाखुश होकर मुर्तद (फिर) जाता है।

तुमने कहाः नहीं, तो ईमान की यही खूबी है कि जिन के दिलों में ईमान की खुशी रच बस जाये वह उससे लौटा नहीं करते।

और मैंने तुमसे पूछा कि क्या वह कभी वादा भी तोड़ते हैं?

तुमने कहा नहीं, रसूलों का यही हाल होता है वह वादा तोड़ते नहीं हैं। और मैंने पूछा कि वह तुम से किस चीज़ के लिये कहते हैं?

तुमने कहा वह हमें हुक्म देते हैं कि अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी को साझीदार न ठहराओ और हमें बुतों की पूजा करने से रोकते हैं। इसलिये अगर यह बातें जो तुम कह रहे तो तो सच है वह जल्द ही इस जगह का मालिक हो जायेगा जहां मेरे यह दोनों पांव हैं। मुझे मालूम था कि वह नबी आने वाला है, मगर मुझे यह नहीं मालूम था कि वह तुम्हारे अन्दर होगा। अगर मैं जानता कि उस तक पहुंच सकूंगा तो उससे मिलने के लिये हर दुख गवारा करता अगर मैं उस मुहम्मद के पास होता तो उसके पांव धोता। ***(जरीदा तर्जुमान से अनुवाद)***

❑❑❑

अनाथ के माल व जायदाद की हिफ़ाज़त करने का हुक्म

अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद जहबी रह०

पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है "जो लोग अनाथों का माल खाते हैं वास्तव में वह अपने पेट आग से भरते हैं और वह जरूर जहन्नम की भड़कती हुयी आग में झोंके जायेंगे"। (सूरे निसा-१०)

पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है "और यतीम के माल के करीब न जाओ मगर ऐसे तरीके से जो बेहतरीन हो यहां तक कि वह सिन्ने रूश्द को पहुंच जायें "अर्थात बालिग़ हो जायें। (सूरे अंआम-१५२)

हज़रत अबू सईद खुदरी रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने हदीसे मेराज में फरमाया मेरा गुजर ऐसे लोगों पर हुआ जिन्हें कुछ लोग ठोड़ियों पर मार रहे हैं दूसरे लोग आग की चटटानें ला कर उनके मुंह में डालते हैं जो उनके नीचे से निकल जाती है मैं ने जिब्रईल से पूछा यह कौन लोग हैं (जिन को सजा दी जा रही है) कहा कि जो लोग यतीम का माल जुल्म से खाते थे आज वह अपने पेट में जहन्नम की आग भर रहे हैं। (मुस्लिम)

इब्ने कसीर ने अपनी तफसीर में आयत "इन्नल लजीन याकुलूना अम्वालल यतामा की तफसीर में और सूरे इसरा के शुरू में इसे इबने अबी हाकिम की तरफ संबद्ध किया है इसकी सनद में अबू हरवन अल अबदी जिसका नाम एमारह बिन जौयन है मतरूक है और कुछ ने तकजीब की है जैसा कि तकरीब में है अतः लेखक का इस हदीस को मुस्लिम की रिवायत कहना भूल है।

ओलमा ने फरमाया कि यतीम (अनाथ) का संरक्षक अगर मोहताज है और भले तरीके से उसके माल में से इतना खा ले कि उसके मफादात की सुरक्षा हो और उसके माल में बढ़ोतरी होती रहे तो कोई हर्ज नहीं है लेकिन अगर जरूरत से ज्यादा खर्च करे तो हराम है। अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता हैः

और यतीम का जो सरपरस्त मालदार हो वह परहेज़गारी से काम ले और जो गरीब हो वह मअरूफ तरीके से खाये। (सूरे निसा-६)

मअरुफ (भले तरीके) से खाने के बारे में चार कथन हैं पहला यह है कि वह कर्ज के तौर पर खायेगा दूसरा यह है कि वह जरूरत के अनुसार बिना फालूत या बेजा खर्च के खायेगा तीसरा यह कि जरूरत के अनुसार इस आधर पर ले गा कि वह यतीम का कोई काम करेगा चौथा यह कि वह जरूरत पर लेगा लेकिन जब अदा करने की ताकत हो जाये तो उसे अदा करे और अगर ताकत न रख सके तो उसके लिये हलाल है। यह कथन इब्ने जौजी ने अपनी तफसीर (टीका) में नकल किया है। सहीह बुखारी शरीफ में है कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने

फरमाया कि मैं और यतीम अनाथ की किफालत (भरण पोषण, देख भाल) करने वाला जन्नत में ऐसे होंगे। ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने शहादत और बीच की उंगली से इशारा किया और दोनों के बीच कुशादगी की। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

यतीम की किफ़ालत यह है कि इसके मामलात की देखभाल की जाये उसके नफा और लाभ की निगरानी की जाये उसका खाना कपड़ा, उसके माल में बढ़ोतरी अगर वह जायदाद वाला हो यह सब उसकी किफालत में दाखिल है और अगर यतीम के पास माल नहीं है तो उसपर खर्च किया जाये उसको अल्लाह की खुशी के लिये पहनाया जाये और हदीस में ''लहू और लिगैरिही'' का जो शब्द आया है तो इसका अर्थ यह है कि यतीम चाहे रिश्तेदार हो या अजनबी अतः रिश्तेदार यतीम की देख भाल भरण पोषण दादा, भाई, मां, चचा, सौतेला बाप मामूं आदि करेंगे और अजनबी का रिश्तेदार हर कोई है अर्थात उसकी देख रेख सबकी जिम्मेदारी है।

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जिसने किसी यतीम को अपने खाने पीने में शामिल किया यहां तक कि अल्लाह ने उसे मालदार बना दिया तो अल्लाह ने उसके लिये जन्नत वाजिब कर दी, सिवा इसके कि कोई ऐसा गुनाह कर दे जिसे बख्शा न जा सके। (तिर्मिज़ी, यह हदीस हसन सहीह है)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जो किसी यतीम के सर पर हाथ फेरे जिसका वाली (मददगार) केवल अल्लाह है तो हर उस बाल के बदले में जिस पर उसका हाथ गुजरा है नेकी मिलेगी जिसने किसी यतीम बच्चे या बच्ची के साथ सदव्यवहार किया तो मैं और वह जन्नत में इस तरह होंगे। (अहमद)

एक आदमी ने अबू दर्दा रजिअल्लाहो से कहा कि मुझको उपदेश कीजिये, फरमाया यतीम पर दया करो, उसे अपने करीब बिठाओ उसको अपना खाना खिलाओ क्योंकि मैंने अल्लाह के सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स०अ०व० से सुना है कि आप के पास एक आदमी आया जो अपनी सख्त दिली का शिकवा कर रहा था, ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स० ने फरमाया जब तुम अपना दिल नर्म करना चाहो तो किसी अनाथ को अपने से करीब कर लो उसके सर पर हाथ फेरो अपने खाने से उसे खिलाओ यह तुम्हारा दिल नर्म कर देगा और अपनी ज़रूरत पूरी करने पर कादिर हो जाओ गे। (तबरी, अहमद)

अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अच्छा घर वह है जिस में किसी यतीम के साथ अच्छा व्यवहार हो रहा हो और बुरा घर वह है जिसमें किसी यतीम के साथ गलत व्यवहार हो रहा हो। वह शख्स अल्लाह का सबसे प्रिय बन्दा है जो किसी अनाथ और बेवा के साथ सदव्यवहार कर रहा हो। रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को वह्य की कि ऐ दाऊद यतीम के लिये हकीकी बाप की तरह रहो और बेवा के लिये दयालु पति की तरह और अच्छी तरह जान लो कि तुम जैसा बोओगे वैसा ही काटोगे अर्थात जैसा काम करोगे वैसा ही बदला पाओगे।

इस्लाम धर्म में दया करने का सवाब

अनुवादः नौशाद अहमद

अम्र बिन शुएब अपने बाप से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रसूल स० ने फरमायाः वह हम में से नहीं है जिसने हमारे छोटे पर रहम नहीं किया और हमारे बड़े का हक़ नहीं पहचाना। (सहीह)

याला बिन मर्रा बयान करते हैं कि हम रसूल स० के साथ चले एक जगह खाने की दावत थी। रास्ते में हुसैन खेलते हुये मिल गये। रसूल स० लपक कर आगे बढ़े और आपने हाथ फैला दिया। अब हुसैन इधर उधर भागने लगे, आप उन्हें हंसाने लगे, यहां तक कि आपने हुसैन को पकड़ लिया, एक हाथ हुसैन की थोड़ी पर और दूसरा सर पर रख कर उन्हें गले लगाया बोसा (चुंबन) लिया और फरमाया हुसैन मेरा है मैं हुसैन का हूं। जो हुसैन को प्यार करेगा अल्लाह उसको प्यार करेगा। हुसैन बेहतरीन कबीलों में से एक कबीला है। (हसन)

बुकैर से रिवायत है कि उन्होंने अब्दुल्लाह बिन जाफर को देखा है कि उन्होंने जैनब बिन्ते उमर बिन अबी सलमा का बोसा लिया उस वक्त जैनब की उम्र दो साल या उसके आस पास थी। (सहीहुल इस्नाद)

हसन बसरी रह० से रिवायत है कि उन्होंने कहाः अगर हो सके तो किसी के बाल भी न देखो, मगर यह कि तुम्हारी बीवी हो या छोटी बच्ची हो, तो ऐसा करो। (सहीहुल इस्नाद)

यूसुफ बिन अब्दुल्लाह बिन सलाम कहते हैं कि रसूल स०ने मेरा नाम यूसुफ रखा, मुझे गोद में बिठाया और मेरे सर पर हाथ फेरा। (सहीहुल इस्नाद)

आइशा रजि० से रिवायत है कि उन्होंने बयान किया कि मैं रसूल स० के यहां लड़कियों के साथ खेला करती थी, मेरी कुछ सहेलियां थीं, जो मेरे साथ खेलती थीं, जब रसूल स० आते थे तो वह भाग जाती थीं। आप उन्हें मेरे पास बुला देते थे और वह मेरे साथ खेलने लगती थीं। (सहीह)

अबुल अजलान अल मुहारिबी से रिवायत है उन्होंने कहाः मैं इब्ने अल जुबैर की फौज में था, मेरे एक चचा ज़ाद भाई का निधन हो गया और उन्होंने अल्लाह की राह में एक ऊंट देने की वसीयत की। मैंने उनके लड़के से कहा कि ऊंट मुझे दे दो, मैं इब्ने अल जुबैर की फौज में हूं। उसने कहा कि मेरे साथ इब्ने उमर के पास चलो ताकि उनसे पूछ लें। हम उनके पास आये, उसने इब्ने उमर से कहा ऐ अबू अब्दुर्रहमान मेरे पिता का निधन हो गया, उन्होंने अल्लाह की राह में एक ऊंट देने की वसिय्यत की है। यह मेरे चाचा हैं और इब्ने अलजुबैर की फौज में हैं, क्या उन्हें ऊंट दे दूं? इब्ने उमर ने कहाः प्यारे बेटे! हर अच्छा काम अल्लाह की राह है।

जरीर रजि० नबी स० से रिवायत करते हैं जो इंसानों पर रहम नहीं करता उस पर अल्लाह भी रहम नहीं करता है। (सहीह)

उमर रजि० से रिवायत है कि उन्होंने कहाः जो शख़्स रहम नहीं करता उस पर भी रहम नहीं किया जाता, जो मआफ नहीं करता उसे

मआफी नहीं मिलती, और जो परहेज़ नहीं करता उसे बचाया नहीं जाता। (हसन)

उमर रजि० से रिवायत है उन्होंने कहा जो रहम नहीं करता उस पर रहम नहीं किया जाता, जो मआफ नहीं करता उसे मआफ नहीं किया जाता, जो तौबा कुबूल नहीं करता उसकी तौबा कुबूल नहीं की जाती और जो दूसरों को नहीं बचाता उसे बचाया नहीं जाता। (हसन)

कुर्रा से रिवायत है कि उन्होंने कहा एक शख्स ने रसूल स० से कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! जब मैं बकरी को ज़बह करता हूं तो मुझे उस पर रहम आता है अगर मैं बकरी को ज़बह करता हूं, आपने फरमायाः अगर तुम को बकरी पर रहम आता है तो अल्लाह तुम पर रहम करेगा। यह वाक्य आपने कई बार कहा। (सहीह)

अबू हुरैरा रजि० कहते हैं कि मैंने सच्चे नबी और सच करार दिये गये अबुल कासिम स० को यह फरमाते हुये सुना है कि रहमत सिर्फ बदकिस्मत ही के दिल से निकाली जाती है। (हसन)

जरीर रजि० नबी स० से रिवायत करते हैं कि जो इंसानों पर रहम नहीं करता अल्लाह भी उस पर रहम नहीं करता। (सहीह)

अनस बिन मालिक रजि० से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी स० बाल बच्चों के हक़ में सबसे ज्यादा दयालु थे। आपका एक दूध पीता बच्चा था, शहर से बाहर, उसका दाया का पति एक लोहार था हम उस बच्चे के पास आया करते थे घर में धुवां भरा होता था, आप बच्चे का बोसा (चुंबन) लेते थे और उसे मुंह से लगाते थे। (सहीह)

अबू हुरैरा रजि० बयान करते हैं कि नबी स० के पास एक शख्स आया, उसके साथ एक बच्चा भी था। वह शख्स बच्चे को सीने से लगाने लगा तो आपने फरमायाः क्या तुम को इस पर रहम आता है? उसने कहा हां, रसूल स० ने फरमाया अल्लाह को तुम पर इससे भी ज्यादा रहम आता है और वह रहम करने वालों में सबसे बड़ा रहम करने वाला है। (सहीहुल इस्नाद)

अबू हुरैरा रजि० से रिवायत है कि रसूल स० ने फरमायाः एक शख्स को राह चलते चलते जोर की प्यास लगी, उसे एक कुवां मिला, वह कुवां में उतर पड़ा और उस ने पानी पी लिया। बाहर निकला तो देख रहा है कि उस कुत्ते को वैसे ही प्यास लगी है जैसे कि मुझे लगी थी, फिर वह कुंवा में उतर कर अपने जुराबों में पानी भरा और उसका मुंह जुराब का पकड़ कर उपर लाया और कुत्ते के मुह में पानी डाल दिया। अल्लाह ने इस आदमी के काम कर्म को कुबूल कर लिया और उसको क्षमादान कर दिया। लोगों ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हमें जानवरों के साथ भलाई का भी सवाब पुण्य मिलता है फरमायाः हर जानदार के साथ भलाई पर पुण्य (सवाब) मिलता है। (सहीह)

अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० से रिवायत है कि रसूल स० ने फरमायाः एक औरत ने बिल्ली को बंद कर रखा था, यहां तक कि बिल्ली भूख से मर गयी, जिसकी वजह से यह औरत जहन्नम में चली गयी। उससे कहा जायेगा और अल्लाह ज्यादा जानने वाला है कि तूने जब उसे बंद कर रखा था तो न खिलाया न पिलाया, न उसे छोड़ ही दिया कि जमीन पर गिरी पड़ी चीज़ खा लेती। (सहीह)

अब्दुल्लाह बिन अमर बिन अल आस नबी स० से रिवायत करते हैं कि आपने फरमाया रहम किया करो तुम पर भी रहम किया जायेगा। मआफ किया करो, तुम को भी मआफ किया जायेगा सख्त अंदाज में बात करने वालों के लिये खराबी है और खराबी है उन लोगों के लिये जो अपने काम पर तकरार करते हैं जबकि वह जानते हैं कि वह नाहक अथवा गलती पर हैं। (सहीह)

अबू उमामा रजि० से रिवायत है उन्होंने कहा कि रसूल स० ने फरमायाः जिसने किसी पर रहम किया भले ही ज़बह किये जाने वाले जानवर हों, अल्लाह तआला क्यामत के दिन उस पर रहम करेगा। (हसन)

पक्षियों पर दया

अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि० से रिवायत है कि रसूल स० एक जगह उतरे तो किसी ने पक्षी के अण्डे उठाये। चिड़या रसूल स० के सर पर आकर फड़फड़ाने लगी। आपने फरमायाः तुममें से किसी ने उसके अण्डे उठाकर उसको दुख पहुचाया है। एक शख्स ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने उसके अण्डे ले लिये हैं फरमायाः उस पर रहम करो, वहीं अण्डे रख दो। (सहीह)

(अल अद्बुल मुफ्रद से)

● ● ●

पाठक गण ध्यान दें

1-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। 2-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सूचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। 3-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। 4-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। 6- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। 7. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

क़्यामत की निशानियाँ

प्रो० डा० मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी

क्यामत को प्रलय-दिवस भी कहा जा सकता है। सभी धर्मों में इसका किसी न किसी रूप में वर्णन हुआ है। अन्तिम ईशग्रंथ पवित्र कुरआन में तो क़ियामत (प्रलय-दिवस) का अत्यन्त विस्तृत वर्णन मिलता है। इसमें प्रलय-सम्बन्धी अनेकानेक लक्षणों और प्रतीकों की ओर संकेत किया गया है। प्रलय के सम्बन्ध में पवित्र कुरआन और हदीसों में पाए जाने वाले विवरणों को दो वर्गों में बांटा जा सकता है।

प्रथमः क़ियामत की बड़ी-बड़ी निशानियां

१. रसूल मुहम्मद स० का आनाः

यह क़ियामत के निकट होने का सबसे बड़ा प्रमाण है। कुरआन में है।

''तो क्या अब इन्हें क़ियामत ही की प्रतीक्षा है कि वह उनके पास अचानक आ पड़े जबकि उसके लक्षण सामने आ चुके हैं। तो जब वह उनके पास आ जाएगी तोउन्हें होश में आने का समय कहां मिलेगा?'' (सूरा-४७, मुहम्मद आयत-१८)

अतः मुहम्मद स० अन्तिम नबी हैं अब क़ियामत तक कोई दूसरा नबी नहीं आएगा। इसलिए आप का आना क़ियामत के निकट होने का सबसे बड़ा प्रमाण है। एक सहीह हदीस में आया है कि नबी स० ने कहा।

क़ियामत और मैं दो उंगलियों के समान हैं जो बहुत ही निकट होती हैं। (बुखारी, ४६३६ तथा मुस्लिम, २६५०)

२. ईसा अलैहि० का धरती पर दोबारा वापस आनाः

कुरआन में है

''बल्कि उसे ईसा को अल्लाह ने अपनी ओर उठा लिया और अल्लाह प्रभुत्वशाली तथा तत्वदर्शी है और किताब वालों में कोई ऐसा न होगा जो उसकी मृत्यु से पूर्व उसपर ईमान न लाए। और वह क़ियामत के दिन उन पर गवाह होगा'' (सूरा-४, अन निसा, आयतोंः १५८. १५६)

अर्थात ईसा क़ियामत के निकट आसमान से वापस आएंगे। उस समय जितने अहले किताब होंगे, वे सब उनके नबी होने पर ईमान लाएंगे।

३. याजूज-माजूज का निकलनाः

कुरआन में है

''यहां तक कि जब याजूज-माजूज खोल दिए जाएंगे और वे हर ऊंचे स्थान से दौड़ते चले आएगें और जब सच्चा वचन (क़ियामत) निकट आ जाएगा, उस समय इस्लाम विरोधियों की आंखें फटी रह जाएंगी और वे कह उठेंगे, हाय अफसोस, हम इस दुर्दशा से निश्चिन्त थे, बल्कि वास्तव में हम स्वंय ही अपराधी थे''। (सूरा २१, अल अंबिया, आयतें ९६-९७)

४. दाब्बाः

अर्थ है पृथ्वी पर चलने वाला। अल्लाह तआला क़ियामत से पूर्व एक ऐसा पशु निकालेगा जो लोगों से बातें करेगा। कुरआन में है।

''जब उनके विषय में (प्रकोप

का) वचन सिद्ध हो जाएगा, हम ध ारती से उनके लिए एक पशु निकालेंगे, जो उनसे बातें करता होगा कि लोग हमारी आयतों पर विश्वास नहीं करते थे।'' (सूरा-२७ अन-नम्ल, आयत-८२)

५. आकाश का धुआं-धुवां हो जानाः कुरआन में है

''अच्छा तो तुम उस दिन की प्रतीक्षा करो, जब आकाश प्रत्यक्ष ध ुआं लाएगा, वह लोगों को ढांक लेगा। यह है दुखद यातना''। (सूरा-४४, अद दुखान, आयतें १०-११)

सहीह हदीसों में क़ियामत से पूर्व की जो दस निशानी बताई गई है उनमें से एक धुआं भी है। (सहीह मुस्लिम २६०१)

लेकिन सहीह बुखारी की एक हदीस से पता चलता है कि जब नबी स० ने मक्के वालों को शाप दिया तो वे अकालग्रस्त हो गए जिसके कारण वे भूख से व्याकुल हो उठे। वे जब आकाश की ओर मुंह करके देखते तो पूरा आकाश धुए से भरा दिखाई देता। इस अवसर पर सूरा-४१, अद दुखान की उपर्युक्त आयतें अवतरित हुईं। (बुखारी, ४८२३)

इसलिए अब्दुल्लाह बिन मसऊ का कथन है कि कियामत की पांच निशानियां तो घटित हो चुकी हैं, जिनमें एक धुआं भी है। (बुखारी ४८२०)

विद्वानों का विचार है कि दोनों बातें सही हो सकती हैं अर्थात धुएं वाली घटना घटित हो चुकी है और फिर क़ियामत के निकट दोबारा भी घटित हो सकती है। शेष जिन पांच निशानियों का वर्णन मुस्लिम की हदीस में आया है, वे यह हैं।

१. पूर्व के देशों में भूकम्प

२. पश्चिम के देशों में भूकम्प

३. अरब के रेगिस्तानों में भूकम्प

४. सूर्य का पश्चिम से निकलना

५. यमन के शहर अदन से आग निकलना और लोगों को भगाते चले जाना।

द्वितीय, क़ियामत के समय विश्व की दशा जब क़ियामत आएगी यह ब्रहमांड तहस नहस हो जाएगा सूरज चांद आपस में टकरा जाएंगे। पहाड़ रूई की तरह भागते फिरेंगे, कोई किसी को पूछने वाला नहीं होगा। कुरआन में बड़े विस्तार के साथ इसका चित्र खींचा गया है।

सूर्य-चांद और तारों की दशाः

''जब सूर्य लपेट दिया जाएगा, जब तारे प्रकाशहीन हो जाएंगे, जब पर्वतों को चला दिया जाएगा, जब दस मास की गर्भवती ऊंटनियां छोड़ दी जाएंगी, जब जंगली जानवर घबराकर एकत्र हो जाएंगे, जब समुद्र उबल पड़ेंगे, जब लोगों को उनकी आत्माओं से जोड़ दिया जाएगा जब जीवित गाड़ी गई कन्या से पूछा जाएगा कि उसकी हत्या किस गुनाह के कारण की गई और जब कर्मपत्र खोल दिए जाएंगे, और जब आकाश की खाल उतार दी जाएगी, और जब नरक भड़काई जाएगी, और जब स्वर्ग निकट कर दिया जाएगा, तो उस दिन प्रत्येक मनुष्य जान लेगा, जो कुछ वह लेकर आया है''। (सूरा-८१, अत-तकवीर, आयतें-१)

''कुरआन में एक अन्य स्थान पर इसका वर्णन इस प्रकार हुआ है।

''वह पूछता है आखिर क़ियामत का दिन कब आएगा? तो बता दो जिस दिन आंखें पथरा जाएंगी तथा चांद प्रकाशहीन हो जाएगा और सूरज तथा चांद एकत्र कर दिए जाएंगे। उस दिन मनुष्य पुकार उठेगा, आज शरण लेने का स्थान कहाँ है? कुछ नहीं, उस दिन कोई शरणस्थान नहीं

होगा उस दिन तुम्हारे रब ही की ओर सबको जाकर ठहरना है। उस दिन मनुष्य को बता दिया जाएगा, जो कुछ उसने आगे बढ़ाया और पीछे टाला''। (सूरा-७५, अल क़ियामह आयतें-६,१३)

अर्थात क़ियामत के दिन प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों का हिसाब लिया जाएगा और प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्म के अनुसार स्वर्ग या नरक में डाल दिया जाएगा कुरआन में है।

''जब आकाश फट पड़ेगा, और जब तारे बिखर पड़ेंगे, और जब समुद्र उबल पड़ेंगे, और जब कब्रों के अन्दर जो हैं उन्हें उठा दिया जाएगा तब प्रत्येक व्यक्ति जान लेगा जो कुछ उसने आगे भेजा और जो कुछ उसने पीछे छोड़ा है। ऐ मनुष्य किस चीज़ ने तुम्हें अपने उदार रब के विषय में धोखे में डाल रखा है, जिसने तुझे पैदा किया, और तुझे ठीक ठीक और सन्तुलित बनाया फिर जिस प्रकार (रूप) में चाहा तुम्हें ढाल दिया, मगर तुम तो बदले के दिन (कियामत) को झुठलाते हो''। सूरा-८२, अल इन्फितार, आयतें १-६)

पृथ्वी और आकाश की दशाः कुरआन में है

''तथा उन लोगों ने अल्लाह का जैसा सम्मान करना चाहिए था, नहीं किया कियामत के दिन सारी ध ारती उसकी मुठठी में होगी तथा आकाश उसके दाएं हाथ में लिपटे हुए होंगे। वह हर प्रकार के शिर्क (साझेदारी) से पवित्र और उच्च है।'' (सूरा-३६, अज जुमर आयत-६७)

''जब धरती भूकम्प से हिला दी जाएगी, और धरती अपने बोझ को बाहर निकाल फेंकेगी, और मनुष्य कहने लगेगा, इसे क्या हो गया है? उस दिन वह अपना वृत्तान्त सुनाएगी, इसलिए कि तुम्हारे रब ने उसे आदेश दिया होगा''। (सूरा-६६, अज़ जिलजाल, आयत-१-५)

पर्वतों की दशाःकुरआन में है

''वह खड़खड़ा देने वाली, क्या है वह खड़खड़ा देने वाली, और तुम्हें क्या पता कि क्या है वह खड़खड़ा देने वाली? जिस दिन लोग बिखरे हुए पतिंगों के सदृश हो जाएंगे, और पर्वत धुनके हुए रंग-बिरंगे ऊन जैसे हो जाएंगे''। (सूरा-१०१, अल कारिया, आयतें१-५)

इस प्रकार कुरआन में अत्यन्त विस्तारपूर्वक क़ियामत का वर्णन किया गया है, ताकि मनुष्य अपनी अवस्था को समझे और कियामत के लिए अपने आपको तैयार करे कि वह कर्मपत्र लेकर अल्लाह के पास जाएगा, ताकि उसको अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त हो।

पवित्र कुरआन में इस बात की चेतावनी दी गई है कि इन्सान यह न समझ ले कि मरने के बाद वह सड़ गल जाएगा और फिर उसको दोबारा जीवित न किया जाएगा बल्कि उसे अवश्य उठाया जाएगा, ताकि वह अपने कर्मों का हिसाब दे।

''नहीं! मैं सौगन्ध खाता हूं क़ियामत के दिन की और नहीं सौगन्ध खाता हूं उस आत्मा की, जो मलामत करने वाली है, क्या मनुष्य यह समझता है कि हम कदापि उसकी हड्डियों को एकत्र नहीं करेंगे। हां, अवश्य करेंगे? हम उसकी पोरों तक को ठीक-ठाक करने की सामर्थ्य रखते हैं। (सूरा-५७, अल कियामह आयतें १-४)

अर्थात अल्लाह सर्वशक्तिमान है। वह जो चाहे कर सकता है। इसलिए कियामत के दिन जो उंगलियां और शरीर के दूसरे भाग सड़ गल गए होंगे उनको दोबारा ठीक कर देगा और उस दिन सभी मनुष्यों को उठा खड़ा करेगा।

इस्लाम धर्म में समता और आज़ादी के सिद्धांत

डा० मुक़्तदा हसन अज़हरी रह०

इस्लाम की नज़र में पाचों महा दीप के इन्सान एक परिवार की हैसियत रखते हैं जो एक माँ बाप से पैदा हुये हैं। पैदाइश के एतबार से उनके बीच कोई अन्तर नहीं है पैदाइश के एतबार से उनके यहाँ बराबरी है और इन्सानी बिरादरी का रिश्ता उनको आपस में जोड़े हुये है इसका उल्लेख कुरआन के सूरे निसा की पहली आयत में किया गया है।

"ऐ लोगो डरते रहो अपने रब से जिसने तुमको पैदा किया एक जान से और इसी से पैदा किया उसका जोड़ा और फैलाए उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें"

इस आयत में इस हकीकत को स्पष्ट किया गया है कि जब सभी इन्सान एक मां बाप से पैदा किये गये हैं तो फिर उनके बीच रंग व नस्ल, भाषा और भूगोल की बुनियाद पर किसी प्रकार का भेद भाव गलत है।

भाषा, रंग और कबाइल का मतभेद क्यों?

कुरआन ने इन्सानी हकीकत में तमाम इन्सानों की बराबरी के बाद रंग व भाषा के मतभेद को निशानी करार दिया है (सूरे रूम-२२) अर्थात इस मतभेद से अल्लाह की कुदरत का कमाल जाहिर होता है कि उसने इतने रंग और इतनी भाषाएं पैदा की हैं।

इसी प्रकार सूरे हुजरात की आयत न.१३ में जमाअत और कबीले के मतभेद को एक दूसरे की पहचान का माध्यम बनाया और साथ ही इस हकीकत को स्पष्ट किया कि फजीलत और वर्चस्व की बुनियाद केवल अच्छा कर्म और अच्छा चरित्र है, किसी खास जमाअत या कबीला से संबन्ध ा की वजह से कोई अच्छा या बुरा नहीं हो सकता।

इस्लाम के सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने हज के अवसर पर अरफात के मैदान में जो खुतबा दिया उसमें भी मानवीय समता को स्पष्ट किया है। ईशदूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः ऐ लोगो! तुम्हारा पालनहार एक है, तुम्हारा बाप एक है, सब आदम से पैदा हुये हैं और आदम को मिटटी से पैदा किया गया है, तुम में बेहतर वह है जो ज्यादा परहेज़गार है किसी अरबी को किसी गैर अरबी पर और किसी गोर को काले पर और किसी काले को गोरे पर कोई वरियता नहीं, लेकिन सत्कर्म की वजह से फजीलत होती है।

इस्लाम के आने के समय अरब जगत में रंग, नस्ल और दौलत को महानता की कसौटी समझा जाता था और लगभग यही हाल रूम और फारस का भी था इस्लाम ने इस मानसिकता को असत्य करार दिया और अरब के इस माहौल में बड़ी स्पष्टता के साथ यह एलान किया कि रंग के गोरेपन से कोई व्यक्ति महान और कालेपन से कोई छोटा नहीं हो सकता।

इस्लाम ने इस नियम का जो व्यवहारिक रूप पेश किया है वह बड़ा दिलचस्प है। हज़रत बिलाल हब्शा के रहने वाले काले रंग के थे। इस्लाम कुबूल करने के बाद ईशदूत हज़तर मुहम्मद स०अ०व० ने उन्हें

मुअज्जिन बनाया अब इसी काले रंग के इन्सान की आवाज़ पर तमाम मुसलमान रोज़ाना पांचों वक्त की नमाज़ अदा करने के लिये जमा होते थे, इनमें से किसी के जेहन में यह सवाल नहीं आता था कि यह आवाज़ एक हब्शी गुलाम की है जिसका रंग काला है।

हज़रत अबू ज़र गिफारी रजिअल्लाहो तआला अन्हो ने झगड़े में गुस्सा हो कर एक काले रंगत वाले सहाबी को या इब्नुस्सौदा अर्थात "काली औरत का लड़का" कह दिया। ईशदूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने यह वाक्य सुनकर सख्त नागवारी जाहिर की और कहा कि तुम इसकी मां के काले रंग का उल्लेख करके उसे ताना दे रहे हो? अभी तुम में अंधकाल की आदत बाकी है याद रखो किसी सफेद रंग की औरत के लड़के को काले रंग वाली के लड़के पर कोई महानता प्राप्त नहीं हां, परहेज़गारी और सत्कर्म महानता का सबब है।

इस तरह का एक वाक्आ मुसलमानों के साथ मिस्र में पेश आया। मिस्र के गवर्नर अम्र बिन आस ने मशहूर सहाबी हज़रत उबादा बिन सामित को जिन का रंग काला था, किबतियों के लीडर मकूकस से वार्ता के लिये भेजा मकूकस उनके रंग के कालापन और मोटापे से क्रोधित हो गया और कहा कि इनकी जगह पर कोई दूसरा शख्स बात करे मुसलमानों ने जवाब दिया कि उबादा ज्ञान और सूझ बूझ में हमसे श्रेष्ठ और हममें सबसे बेहतर हैं। हमारे अमीर ने इन को प्रतिनिधिमण्डल का प्रमुख बना कर भेजा है इसलिये हम उनके आदेश की अवज्ञा नहीं कर सकते। मकूकस ने आश्चर्य से पूछा कि काले रंग का इन्सान तुम में सब से श्रेष्ठ कैसे हो सकता है? मुसलमानों ने जवाब दिया कि इस्लाम में श्रेष्ठता की कसौटी रंग नहीं अच्छे चरित्र और सत्गुण हैं। अंधकाल में दौलत को भी श्रेष्ठता की कसौटी समझा जाता था, गरीब आदमी में जितनी खूबियां भी हों उसे समाज में कमतर समझा जाता था। इस्लाम ने इस सोच को असत्य करार दिया और सूरे निसा की आयत न० ११५ में एलान किया कि सत्य और न्याय के लिये गवाही का अवसर हो तो अपने और बेगाने या अमीर और गरीब का कोई लिहाज़ नहीं किया जायेगा, अल्लाह से बढ़कर कोई उनका शुभचिंतक नहीं हो सकता।

बुख़ारी शरीफ की एक हदीस में है कि ईशदूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० एक आदमी के साथ बैठे हुये थे एक आदमी का इधर से गुज़र हुआ, आपने पास बैठे हुये शख्स से पूछा कि इसके बारे में तुम्हारी क्या राय है? उसने जवाब दिया कि शरीफ (सज्जन) आदमी है अगर शादी का पैगाम दें तो लोग कुबूल करेंगे और अगर सिफारिश करे तो सुनेंगे यह सुनकर आप खामोश रहे। फिर एक दूसरा शख्स गुजरा तो आपने उसके बारे में भी पूछा साथ के आदमी ने भी जवाब दिया कि यह एक गरीब मुसलमान है न इससे कोई शादी करना पसन्द करेगा न इसकी सिफारिश कुबूल करेगा। आपने फरमाया यह शख्स पहले जैसे असंख्य (बेशुमार) लोगों से बेहतर है।

जमा-न-ए-जाहिलियत (इस्लाम के आने से पहले के जमाने को जमानए जाहिलियत कहा जाता है) के समाज में एक भेद भाव बड़े और छोटे मालिक और गुलाम की थी इसकी बुनियाद चरित्र की खूबी के बजाये स्वंभू कसौटी पर थी चूंकि यह भेदभाव अर्थात विभाजन भी इस्लाम की रूह समता के खिलाफ थी इसलिये

इस्लाम ने बड़े निर्णायक अन्दाज़ में इसे असत्य करार दिया। ईशदूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० की इच्छा थी कि मक्का के हैसियत और वैभव वाले लोग इस्लाम कुबूल कर लें तो इससे मुसलमानों को ताक़त मिलेगी। एक बार मुश्रिकों ने आप को सन्देश भेजा कि आप कमज़ोर और बेहैसियत लोगों को अपने पास से हटा दें तो हम आप का दीन कुबूल कर सकते हैं आपने उनकी यह मांग रद कर दी फिर उन लोगों ने कहा कि इन कमज़ोरों को पिछली सफ में कर दीजिये ताकि हम आप के पास आ कर बैठ सकें। ईशदूत मुहम्मद स०अ०व० इस आफर (प्रस्तुति) पर गौर करने लगे आप उनके ईमान लाने के इच्छुक थे इसलिये सोचा उनकी बात मान ली जाये फिर जब मुसलमान हो जायेंगे तो उनका घमण्ड समाप्त हो जाएगा।

इस अवसर पर सूरे अंआम की आयत न०५२, ५३. अवतरित हुयी और साफ तौर पर यह फैसला सुना दिया गया कि जो लोग इस्लाम कुबूल कर चुके हैं उनको मज्लिस में पीछे नहीं किया जा सकता है और जो लोग अपने आप को बड़ा समझते हैं उन्हें अगर हक (सत्य) से प्रेम है तो घमण्ड से बाज आ जाना चाहिये और मुसलमानों की मज्लिस में किसी विशेष आव भगत का ख्याल छोड़ देना चाहिये।

इस्लाम के बाद अरबों को ईरानियों और रूमियों के मुकाबले में जो वर्चस्व मिला था उसका सबब दुनियावी वर्चस्व नहीं था बल्कि अच्छे चरित्र सुशील स्वभाव थे वरना दुनियावी वर्चस्व में रूम और ईरान के लोग अरबों से कहीं ज्यादा थे।

सत्ता के नशे में न्याय का दामन हाथ से छूट जाता है और इन्सान अकारण तरफदारी का शिकार हो जाता है इस्लाम ने अपने मानने वालों को इस मर्ज से बचने का उपदेश दिया है और मुसलमानों ने दुनिया के सामने इस शिक्षा की व्यवहारिक रूप पेश की है। प्रसिद्ध सहाबी अम्र बिन आस मिस्र के गोवर्नर थे उनके लड़के का एक मिस्री किबती से झगड़ा हो गया। गोवर्नर के लड़के ने मिस्री किबती को अकारण मार दिया मिस्री ने कहा मैं अमीरूल मोमिनीन से इस अत्याचार की शिकायत करूंगा। गोवर्नर के लड़के ने बाप के पद का सहारा लेते हुये कहा जाओ शिकायत करो मेरा कुछ नहीं बिगड़े गा मैं प्रतिष्ठित बाप का बेटा हूं। हज के दिनों में मदीना में हजरत उमर रजिअल्लाहो अन्हो विभिन्न प्रतिनिधिमण्डल के साथ बैठे थे इसी दौरान मिस्री किबती पहुचा और शिकायत करते हुये पूरी दास्तान (घटना) बताई हज़रत उमर रजिअल्लाहो अन्हो ने घटना को सुना तो उनको गुस्सा आ गया। अपने गोवर्नर अम्र बिन आस को अप्रियता से देखते हुये सवाल किया कि लोग आज़ाद पैदा हुये हैं उन्हें तुम लोगों ने किस दलील से गुलाम समझ लिया है? फिर हज़रत उमर रजिअल्लाहो अन्हो ने अपना कोड़ा किबती को दे कर कहा कि प्रतिष्ठित मां बाप के लड़के को उसी तरह मारो जैसे इसने तुम को मारा था।

इस उदाहरण से हम अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि इन्सान की राह में धर्म या सत्ता कुछ भी रूकावट नहीं है जिसका जो हक है उसे मिलना चाहिये। धर्म के मतभेद या सत्ता से वंचित होने के कारण हम किसी से उसका हक नहीं छीन सकते लेकिन आधुनिक काल में लोगों का रूझहान दूसरा है। अगर कोई सत्ता में है तो

अपराध के बावजूद सजा से बच जाता है और धर्म को मानने वाला आदमी हमेशा अपने धर्म की पासदारी अर्थात अनुसरण करता है।

इस्लाम की शिक्षा के अनुसार साधारण अधिकार में शासन एवं प्रजा के बीच भेद भाव गलत है। रूम और फारस के बादशाह स्वयं को मानव श्रेणी से ऊंचा समझते थे वह प्रजा को अपना सेवक समझते थे लेकिन प्रजा की सेवा को अपना कर्तव्य नहीं समझते थे। इसी दृष्टिकोण के आधार पर मिस्र के फिरऔन ने स्वंय को अपनी प्रजा का रब्बे आला (उच्चतम पालनहार) कहा था और फ्रांस के बादशाह ने कहा था कि मैं ही देश और हुकूमत हूं। इसके मुकाबले इस्लाम ने ईशदूत मुहम्मद स०अ०व० को शिक्षा दी कि आप कह दीजिये कि मैं तुम्हारी तरह का इन्सान हूं लेकिन मेरे पास वह्य (प्रकाशना) आती है। जब अबू बक्र रजिअल्लाहो अन्हो खलीफा हुये तो साफ तौर पर एलान किया कि मुझे तुम पर शासक बनाया गया है लेकिन मैं तुम में सबसे बेहतर नहीं हूं, मैं जब तक अल्लाह और रसूल की बात मानता रहूं तुम मेरी बात मानो वरना इनकार कर दो।

हज़रत उमर ने एक बार लोगों से पूछा कि अगर अमीरूल मोमिनीन किसी औरत को अश्लीलता करते हुये देखें तो क्या अकेले अमीरूल मोमिनीन की गवाही की बुनियाद पर उस औरत को सजा दी जा सकती है? हज़रत अली रजिअल्लाहो अन्हो ने जवाब दिया कि अगर चार गवाह नहीं पेश कर सकेगा तो उस पर हद (सजा) लागू किया जायेगा अर्थात आम मुसलमानों की तरह उसके साथ व्यवहार होगा। हज़रत उमर रजिअल्लाहो अन्हो ने कूफा में अपने गोवर्नर अबू मूसा अश्अरी को लिखा कि तुम लोगों की तरह एक आदमी हो लेकिन तुम्हारा बोझ भारी है जो मुसलमानों का शासक बनता है प्रजा के लिये उसकी जिम्मेदारी वही होती है जो गुलाम की आका स्वामी के लिये होती है हज़रत उस्मान रजिअल्लाहो अन्हो ने कहा कि अगर हक का सवाल आ जाये तो मैं गुलाम की तरह उसे कुबूल कर लूंगा। मुस्लिम शासकों ने प्रजा सेवा और समता के इसी व्यवहार के आधार पर कैसरो किसरा के घमण्ड का अन्त कर दिया था।

(प्रेस रिलीज़)

रबीउल अव्वल १४४६ का चाँद नज़र आगया

दिल्ली, ४ सितंबर २०२४

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' से जारी अखबारी बयान के अनुसार दिनांक २६ सफ़र १४४६ हिजरी अर्थात ४ सितंबर २०२४ बुधवार को मग्रिब की नमाज़ के बाद अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' की एक महत्वपूर्ण मीटिंग हुई और ज़ुलहिज्जा के चांद को देखने के सिलसिले में यथापूर्व देश के अधिकांश राज्यों की जमाअती इकाइयों के पदधारियों और समुदायिक संगठनों से फून के माध्यम से संपर्क किये गये जिसमें विभिन्न राज्यों से चांद को देखने की प्रमाणित खबर मिली। इस लिये यह फैसला किया गया कि दिनाँक ५ सितंबर २०२४ जुमेरात के दिन रबीउल अव्वल की पहली तारीख होगी ।

अम्र बिन आस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की फ़ज़ीलत

सईदुर्रहमान सनाबिली

अम्र बिन आस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की फज़ीलत के लिये यही काफी है कि आप सहाबी हैं और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की संगत ऐसी संगत है जिस की बराबरी दुनिया की कोई बराबरी नहीं कर सकती निम्न पंक्तियों में आप की फज़ीलत का उल्लेख किया जा रहा है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप के ईमान की गवाही दी है। उक़बा बिन आमिर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो कहते है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना लोग तो इस्लाम लाये हैं लेकिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ईमान की दौलत से मालामाल हुए हैं'' (सुनन तिर्मिज़ी ३८४४, मुस्नद अहमद, १७४१३, शैख अल्बानी ने सहीहुल जामे ६७१ में इसे हसन क़रार दिया है।

एक दूसरी हदीस में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अम्र बिन आस और आप के भाई हिशाम के लिये ईमान की गवाही दी। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः आस के दोनों बेटे अम्र और हिशाम ईमान वाले हैं'' (मुस्नद अहमद ८०४२ शैख अल्बानी ने इस हदीस को सहीह क़रार दिया है।

इस हदीस में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अम्र बिन आस के ईमान के बारे में स्वयं गवाही दी है यह हजरत अम्र बिन आस की श्रेष्ठता और फ़ज़ीलत को दर्शाता है।

इसी तरह से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अम्र बिन आस के नेक होने की भी गवाही दी है। तलहा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि क्या मैं तुम लोगों को एक बात न बताऊँ जिसे मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुन रखी है। मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुनाः अम्र बिन आस कुरैश के नेक लोगों में से हैं। सुनन तिर्मिज़ी ३८४५, मुस्नद अहमद १३८२, शैख अलबानी ने इस हदीस को शवाहिद के आधार पर सहीह क़रार दिया है।

अम्र बिन आस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की गिंती अरब के अत्यंत बुद्धिमान और समझदार लोगों में से होता है आप को ''अरतबूनल अरब'' अर्थात अरब का चालाक और चतुर इन्सान भी कहा जाता है। यह इस्लाम के इतिहास का एक अनोखा वाक़आ है कि कोई सहाबी पहले किसी ताबई के हाथ पर ईमान लाये और बाद में सहाबी का भी दर्जा मिला, इन्होंने पहले नज्जाशी बादशाह के हाथ पर इस्लाम कुबूल किया था। (मुस्नद अहमद ४/१६८ अस्सुनानुल कुबरा, बैहक़ी, शैख शुएब अरनाऊत ने इस की सनद को हसन क़रार दिया है)

अम्र बिन आस और ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने इस्लाम कुबूल करने पर अल्लाह के रसूल ने खुशी का इज़हार करते हुए फ़रमाया कि मक्का ने अपने जिगर के टुकड़ों को तुम्हारी तरफ उछाल दिया है (शैख अलबानी ने इस रिवायत के बारे में कहा है कि यह सहीह मुर्सल है, फेक्हुस्सीरहः पृष्ठ २२२)

❑❑❑

(प्रेस रिलीज़)

देश व समुदाय और मानवता के निमार्ण, विकास व शान्ति के लिये आज़ादी की नेमत की क़द्र करें: मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी

१६ अगस्त २०२४

स्वतंत्रता दिवस सभी देश वासियों को मुबारक हो! निस्सन्देह यह ऐतिहासिक दिन खुशी और जश्न के साथ आत्मनिरीक्षण करने, मुलकी, मिल्ली, समाजी और व्यक्तिगत रूप से अपनी समीक्षा करने, आज़ादी की नेमत की हिफ़ाज़त करने, देश को निर्माण एवं विकास के आस्मान पर पहुँचाने और इसे अम्न व शान्ति और प्यार मुहब्बत का स्थल बनाने के लिये अपने संकल्प को दोहराने का भी दिन है। इन ख्यालात का इज़हार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी ने किया। वह १५ अगस्त २०२४ को मर्कज़ी जमीअत की उच्च प्रशिक्षणिक एवं शैक्षिक संस्था अल माहदुल आली लित तखस्सुस वद दिरासातिल इस्लामिया अहले हदीस कम्प्लैक्स जामिया नगर, नई दिल्ली में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह से झण्डारोहण के बाद संबोधित कर रहे थे।

अध्यक्ष महोदय ने अपने संबोधान में स्वतंत्रता संग्राम के हवाले से अहले हदीस की कुर्बानियों विशेष रूप से क़सूरी ओलमा, रमजानपूरी ओलमा, अमृतसरी, सादिक़ पूरी ओलमा का उल्लेख किया और कहा कि मुसलमानों ने जब ''हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, आपस में सब भाई भाई'' का ऐतिहासिक नारा दिया था तो पूरे देश के साधारण और असाधारण लोगों ने पूरी एकता के साथ स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होकर एक साम्राजी शक्ति को देश निकाला दिया था आज इसी एकता, सौहार्द, प्यार व मुहब्बत और देश भक्ति की भावना की ज़रूरत है।

मर्कज़ी जमीअत के सम्माननीय अध्यक्ष ने कहा कि आइये हम संकल्प करें कि हम दिल व जान से आज़ादी की इस नेमत की सुरक्षा करेंगे और देश को अम्न व शान्ति का स्थल, प्यार व एकता और विकास एवं निमार्ण का प्रतीक बनायेंगे। प्रेस रिलीज़ के अनुसार इस महत्वपूर्ण अवसर पर अल माहदुल आली में झण्डारोहण के बाद देशगान और कौमी तराना सारे जहाँ से अच्छा गाया गया और इस समारोह में शरीक लोगों के बीच मिठाई बाँटी गई।

इस अवसर पर मुफ्ती जमील अहमद मदनी, मौलाना डा० मुहम्मद शीस इदरीस तैमी, मौलाना मुहम्मद रईस फैज़ी, डा० अब्दुल वासे तैमी, रहमत कलीम, माहद के क्षात्र एवं कार्यकर्ता, जमाअती मित्रों, अयाज़ तक़ी और अनवर अब्दुल कैयूम आदि ने शिर्कत की।

(जरीदा तर्जुमान १-१५ सितंबर २०२४ में प्रकाशित प्रेस रिलीज़ का सारांश)

❑❑❑

(प्रेस रिलीज़)

केरल के वायनाड में भूस्खलन से भारी जान-व माल की क्षति पर रंज व ग़म का इज़हार

मुसीबत की इस घड़ी में खूब मदद करें: मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी

दिल्ली २ अगस्त २०२४

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अध्यक्ष मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी ने एक प्रेस रिलीज़ में केरल के नगर वायनाड में भारी भू-स्खलन जिस में २०० से अधिक लोग मारे गये, पर रंज व ग़म का इज़हार किया है। इसके अलावा देश के अन्य भागों में प्राकृतिक आपदा के नतीजे में जो नुकसानात हुए हैं उन पर भी अपने दुख का इज़हार किया और राहत कार्य की मांग की।

अध्यक्ष महोदय ने अपनी प्रेस रिलीज़ में प्राकृतिक आपदा से प्रभावितों से हमदर्दी का इज़हार किया है और प्रभावित क्षेत्रों के वासियों से अपील की है कि इन कठिन हालात में वह सब्र व संयम अपनायें, आपसी भाई चारा और आपसी सहयोग का ख़ास ख़्याल रखें। इसके अलावा शुभचिंतकों से बिना किसी समुदाय व धर्म के अन्तर के अपील की है कि वह अपने भाइयों की मुसीबत की इस घड़ी में खूब मदद करें। साथ ही राज्य एवं केन्द्र सरकारें जो राहत कार्य में काफी चौकस नज़र आ रही है उनसे मांग की है कि प्रभावितों को राहत, पुनर्वास और नुकसानात के मुआवज़ा के सिलसिले में उचित पहल करें, इस में किसी प्रकार की कोताही न बर्ती जाये और प्रशासन को पूरी तरह से चौकस कर दिया जाये।

प्रेस रिलीज़ में कहा गया है कि मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस की प्रादेशिक इकाई राहत पहुंचाने का काम जिस बड़े स्तर पर कर रही है वह सराहनीह है और हालात का तक़ाज़ा है कि यह कोशिशें जारी रहें। अध्यक्ष महोदय ने अपने अख़बारी बयान में कहा कि इतने बड़े स्तर पर जान व माल की तबाही व बर्बादी प्राकृतिक व्यवस्था का भाग है और धरती पर इस तरह की आपदा हम इन्सानों के अत्याचार और पाप के साधारण होने की वजह से आती है और कभी कभी अल्लाह तआला संभलने के लिये अपनी निशानियाँ जाहिर करता है अतः बन्दों को चाहिए कि वह अपने पापों से तौबा और अल्लाह तआला से क्षमायाचना करें। (जरीदा तर्जुमान १६-३१ अगस्त २०२४)

व्ययपारी के साथ मुहम्मद स० का व्यवहार

बच्चो!

एक दफा की बात है कोई देहाती एक घोड़ा बेच रहा था, मुहम्मद स० को वह घोड़ा पसंद आ गया। आपने उसे खरीद लिया और देहाती (बददू) से कहा, आओ, मेरे साथ चलो और इस घोड़े की कीमत ले लो देहाती वह घोड़े लिये हुये आपके साथ चला। चलते चलते आप थोड़ा सा आगे बढ़ गये और देहाती पीछे रह गया। राह में एक शख्स ने उस घोड़े का दाम ज्यादा लगा दिया। इस देहाती को लालच पैदा हुआ, उसने मुहम्मद स० को पुकार कर कहाः यह घोड़ा खरीदो गे या मैं इसे दूसरे के हाथ बेच दूं? प्यारे नबी मुहम्मद स० ने फरमायाः मैं तो इस घोड़े को खरीद चुका हूं, उस ने कहा कदापि (हर्गिज) नहीं, कोई गवाह लाओ, वहां कौन गवाह था, लोगों ने उस देहाती को समझाया कि अल्लाह के संदेष्टा मुहम्मद झूठ नहीं बोलते, मगर वह नहीं माना और बराबर यही कहता रहा कि गवाह लाओ, इसी बीच एक सहाबी हज़रत अबू खुजैमा अंसारी रजि० आ गये, उन्होंने पूरा माजरा (वाक्या) सुना तो फरमाया, मैं गवाही देता हूं कि तूने मुहम्मद स० के हाथ घोड़ा बेच दिया है और मामला (लेन देन) तय हो गया है।

> एक दिन संसार का अंत हो जायेगा, सब मुर्दे जिंदा किये जायेंगे, अच्छाई बुराई तौली जायेगी। नेक लोग जन्नत में और बुरे लोग जहन्नम में डाले जायेंगे तो हमने इन सब बातों को बिना देखे सच मान लिया और वगाही देते हैं कि यह सब जरूर (अवश्य) होगा। इसी तरह आपसे सुनकर हम इस की भी गवाही देते हैं कि आप ने घोड़ा खरीदा है और यह देहाती झूठ बोल रहा है।

प्यारे नबी मुहम्मद स० ने उनसे कहा कि तुम ने यह गवाही कैसे दी जब कि तुम हमारे साथ नहीं थे? उन्होंने जवाब दिया। हुजूर! आप जब खबर देते हैं कि अल्लाह है तो हम गवाही देते हैं कि वास्तव में (वाक़ई) अल्लाह है। आपने हम को बताया कि एक दिन संसार का अंत हो जायेगा, सब मुर्दे जिंदा किये जायेंगे, अच्छाई बुराई तौली जायेगी। नेक लोग जन्नत में और बुरे लोग जहन्नम में डाले जायेंगे तो हमने इन सब बातों को बिना देखे सच मान लिया और गवाही देते हैं कि यह सब जरूर (अवश्य) होगा। इसी तरह आपसे सुनकर हम इस की भी गवाही देते हैं कि आप ने घोड़ा खरीदा है और यह देहाती झूठ बोल रहा है।

बच्चों!

हम आप को भी हज़रत अबू खुज़ैमा अंसारी की तरह मुहम्मद स० पर दिल से यकीन और मुहम्मद स० की तरह मामूली से मामूली आदमी के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिये।

''इस्लामी कहानियां'' से साभार

❑❑❑

सब्र का फल

बूढ़े बाप की आखों का सितारा जब गुम हो गया तो बहुत रंजीदा हुये लेकिन उस रंज को भुलाने के लिये उनके छोटे भाई बिनयामीन को देख कर गम भुला लिया करते थे। इस सूरत में यही सबसे छोटा बेटा ही आखों का तारा था। यहां यह बात मालूम रहे कि जबान से जाहिर न करते हुये दिल ही दिल में रंज करना मना नहीं है और न ही नबुव्वत की शान के खिलाफ है। यहां तक कि सिर्फ आखों से आंसू बहाना भी मना नहीं है बल्कि यह इन्सान की फितरत है। औलाद की मुहब्बत अल्लाह पाक ने वालिदा वालिद (मां बाप) के दिलों में डाल दी है। अगर किसी को औलाद का रंज न हो तो उसकी मानवता पर शक का प्रश्न चिन्ह लगता है। नबी सलल्लल्लाहु अलैहि० वसल्लम के बेटे जनाब इब्राहीम की वफात हो गयी तो आप की आंख से आंसू बह बड़े और फरमायाः ऐ इब्राहीम! हम तेरी जुदाई से रन्जीदा हैं लेकिन जबान से कोई ऐसा शब्द नहीं निकालते जिस से हमारा परवरदिगार नाराज़ हो सुब्हानल्लाह यही फितरी बात है और यही सबसे बेहतरीन शिक्षा है कि आखें तो रंज व गम से आंसू बहायें मगर जबान से शिकायत न करें। कहा जाता है कि २० साल तक हज़रत याकूब अलैहि० यूसुफ की जुदाई में रोते रहे, जबकि उस ज़माने में उनसे बढ़कर कोई बन्दा अल्लाह का मकबूल न था। यह परवरदिगार की तरफ से परीक्षा थी जो अपने बन्दों से लिया करता है। जब बेटों ने बूढ़े बाप को सब्र की नसीहत की तो उन्होंने कहा कि तुम सब्र का उपदेश न करो। सब्र का अर्थ यह है कि बन्दे के सामने रंज व गम का इजहार न किया जाये और मैं भी बन्दों से न करके अल्लाह से करता हूं और मुझको अल्लाह की तरफ से वे बातें मालूम हैं जो तुमको मालूम नहीं है यानी यह कि यूसुफ जीवित हैं और एक दिन ज़रूर ही वह मुझसे मिलेगा और मेरे रोने पीटने पर अवश्य एक न एक दिन मुझ पर रहम फरमायेगा। (वहीदी) इसके बाद हज़रत याकूब ने कहा कि बेटो! मायूस होकर न बैठ जाओ और यूसुफ और उसके भाई बिनयामीन का पता लगाओ। वास्तव में वहय के जरिये इशारा भी मिल चुका था और वे समझ चुके थे कि यूसुफ की खुश्बू उसी तरफ से आने वाली है। एक तरफ तो यह हालात और दूसरी तरफ यह हाल कि सूखा (काल) बढ़ता जा रहा था। भाइयों ने मिस्र आ कर हज़रत युसूफ से कहा कि हमारे घर वालों को सख्त परेशानी का सामना है। हज़रत युसूफ ने भी उनका हाल सुना और देखा कि किस प्रकार सामने खड़े होकर भीख मांग रहे हैं तो मुहब्बत से बेकाबू हो गये और अपने आपको जाहिर कर दिया। जब उन्होंने भाइयों से पूछा कि तुम्हें मालूम है कि यूसुफ के साथ तुम लोगों ने क्या सुलूक किया था? तो भाई लोग चौंक उठे कि यह यूसुफ का जिक्र इस तरह क्यों कर रहा है फिर उन्होंने उनकी आवाज़ और सूरत पर गौर किया तो उन्हें यकीन हो गया कि हो न हो यूसुफ यही है चुनानचे हैरान होकर पूछा कि क्या आप ही यूसुफ हैं? आप अनुमान लगा सकते हैं कि हज़रत युसुफ ने अपने भाइयों से जो प्रश्न किया वह केवल इस लिये किया था ताकि २० वर्ष के हालात और मौजूदा हालात को तौल लें वर्ना हज़रत यूसुफ ने अपने ताल्लुक से एक शब्द भी भाइयों से न कहा। यह था हज़रत सयुसुफ अलैहि० का अखलाक़। (तर्जुमा सनाई पृष्ठ ६०६)

गाँव महल्ला में सुबह शाम पढ़ाने के लिये मकातिब क़ाइम कीजिए मकातिब में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का आयोजन कीजिये

हज़रात! पवित्र कुरआन इन्सानों और जिन्नों के नाम अल्लाह का अंतिम सन्देश है जो आखिरी नबी पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ जो मार्गदर्शन का स्रोत, इबरत व उपदेश का माध्यम, दीन व शरीअत और तौहीद व रिसालत का प्रथम स्रोत है जिस का अक्षर-अक्षर ज्ञान और हिक्मत व उपदेश के मोतियों से परिपूर्ण है जिस का सीखना सिखाना, और तिलावत सवाब का काम और जिस पर अमल सफलता और दुनिया व आखिरत में कामयाबी का सबब और ज़मानत है और कौमों की इज़्ज़त व जिल्लत और उत्थान एवं पतन इसी से सशर्त है। यही वजह है कि मुसलमानों ने शुरूआत से ही इसकी तिलावत व क़िरत और इस पर अमल का विशेष एहतमाम किया। हिफ्ज व तजवीद और कुरआन की तफसीर के मकातिब व मदारिस काइम किए और समाज में इस की तालीम व पैरवी को विशेष रूप से रिवाज दिया जिस का परिणाम यह है कि वह कुरआन की बरकत से हर मैदान में ऊंचाइयों तक पहुंचे लेकिन बाद के दौर में यह उज्जवल रिवायत दिन बदिन कमजोर पड़ती गई स्वयं उप महाद्वीप में कुरआन की तालीम व तफसीर तो दूर की बात तजवीद व किरात का अर्से तक पूर्ण और मजबूत प्रबन्ध न हो सका और न इस पर विशेष ध्यान दिया गया जबकि कुरआन सीखने, सिखाने, कुरआन की तफसीर और उसमें गौर व फिक्र के साथ साथ तजवीद भी एक अहम उददेश था और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की बड़ी ताकीद भी फरमाई थी।

शुक्र का मकाम है कि चन्द दशकों पहले मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द सहित विभिन्न पहलुओं से शिक्षा जागरूकता अभियान के पिरणाम स्वरूप, मदर्सों, जामिआत, और मकातिब व मसाजिद में पवित्र कुरआन की तजवीद का मुबारक सिलसिला शुरू हुआ था जिस के देश व्यापी स्तर पर अच्छे परिणाम सामने आए। पूरे देश में मकातिब बड़े स्तर पर स्थापित हुए और बहुत सी बस्तियों में मकतब की तालीम के प्रभाव से बच्चों का मानसिक रूप से विकास होने लगा लेकिन रोज़ बरोज़ बदलते हालात के दृष्टिगत आधुनिक पाठशालाओं, कन्वेन्ट्स और गांव में मदारिस की वजह से मकातिब बहुत प्रभावित हुए इस लिये मकातिब को बड़े और अच्छे स्तर पर विकसित करने की ज़रूरत है ताकि नई पीढ़ी को दीन की बुनियादी बातों और पवित्र कुरआन से अवगत कराया जा सके।

इसलिये आप हज़रात से दर्दमन्दाना अपील है कि इस संबन्ध ा में विशेष ध्यान दें और अपने गांव महल्लों में सुबह व शाम पढ़ाने के लिये मकातिब की स्थापना को सुनिश्चित बनाएं। अगर काइम है तो उनकी सक्रियता में बेहतरी लाएं, प्राचीन व्यवस्था को अपडेट करें, इन में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का विशेष आयोजन करें ताकि जमाअत व मिल्लत की नई पीढ़ी को दीन व चरित्र से सुसज्जित करें और उन्हें दीन व अकीदे पर काइम रख सकें।

अल्लाह तआला हम सब को एक होकर दीन जमाअत व जमीअत और मुल्क व मिल्लत की निस्वार्थता सेवा करने की क्षमता दे, हर तरह के फितने और आजमाइश से सुरक्षित रखे और वैश्विक महामारी कोरोना से सबकी रक्षा करे। आमीन

अपील कर्ता

असगर अली इमाम महदी सलफी

अमीर, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द एवं अन्य जिम्मेदारान

Posted On 24-25 Every Month
Posted At LPC, Delhi
RMS Delhi-110006
"Registered with the Registrar of Newspapers for India"

SEPTEMBER 2024
RNI - 53452/90
P.R.No.DL (DG-11)/8065/2023-25

ISLAH-E-SAMAJ

4116, Urdu Bazar, Jama Masjid, Delhi-110006

अहले हदीस मंज़िल की तामीर व तकमील के सिलसिले में

सम्माननीय अइम्मा, खुतबा, मस्जिदों के संरक्षकों और जमईआत के पदधारियों से पुरजोर अपील व अनुरोध

अहले हदीस मंज़िल में चौथी मंज़िल की ढलाई का काम हुआ चाहता है और अन्य तीनों मंज़िलों की सफाई की तकमील के लिये आप से अनुरोध है कि आने वाले जुमा में नियमित रूप से अपनी मस्जिदों में इसके सहयोग के लिये पुरज़ोर एलान फरमायें और नीचे दिये गये खाते में रकम भेज कर जन्नत में ऊंचा मक़ाम बनाएं और इस सद-क़-ए जारिया में शरीक हों।

सहयोग के तरीक़े (१) सीमेन्ट सरिया, रोड़ी, बदरपुर, रेत (२) नक़द रक़म (३) कारीगरों और मज़दूरों की मज़दूरी की अदायगी (४) खिड़की, दरवाज़ा, पेन्ट, रंग व रोगन का सामान या क़ीमत देकर सहयोग करें और माल व औलाद और नेक कार्यों में बर्कत पाएँ।

paytm UPI

9899152690@ptaxis

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c No. **629201058685** (ICIC Bank)
Chandni Chowk, Delhi-110006
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292)
पता:-4116 उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006
Ph. 23273407, Fax : 23246613

अपील : सदस्यगण, मर्कज़ी जमीअत अलहे हदीस हिन्द

Total Pages 28